Date 23.5.20

①

DII (Hons.), Paper – III

Lecture No – 39

Dr. Kumari Kavita
Associate Professor
Marwari College, Darbhanga

Topic — Unconscious mind

6) नामों का अचानक याद आ जाना (Sudden recollection of names) :— हम सब जानते हैं कि कभी-कभी किसी व्यक्ति, वस्तु अथवा स्थान का नाम लाख कोशिश करने पर भी याद नहीं कर पाते हैं और असमर्थ होकर उसकी याद करना छोड़ देते हैं। जब नामों का चिन्तन करना छोड़ देते हैं, तो अचानक उनका स्मरण आ जाता है। फ्रायड ने इसका आधार अचेतन के आधार पर दिया है। ऐसी बातें अचेतन मन में रहती हैं, इसलिए चेतन पर उनका कोई अधिकार नहीं होता। हां मौका पर वे अपने-आप प्रकट हो जाती हैं।

7) घबड़ाहट (Nervousness) :— घबड़ाहट की हालत में व्यक्ति ऐसी बातें बोलने लगता है, जो दूसरों को आश्चर्य में डाल देती है। व्यक्ति को घबड़ाहट की हालत में कही गई बातों पर विश्वास नहीं होता। सवाल है कि घबड़ाहट में व्यक्ति ऐसी बात क्यों करता है? और फिर उसे बाद में भूल क्यों जाता है? यह सब अचेतन मन का करतूत है।

8) समस्या का स्वतः समाधान (Automatic Solution of the Problem) :— कभी-कभी ऐसा होता है कि व्यक्ति अपनी समस्याओं को हल करने का भरसक प्रयास करता है, लेकिन समस्या का हल नहीं हो पाता है। जब वह चिन्तन करना छोड़ देता है तो कुछ देर बाद उसका समाधान अपने आप हो जाता है। इसका कारण है कि व्यक्ति जब चेतन

स्वप्न से सोचना छोड़ देता है तो मन का अचेतन भाग क्रियाशील हो जाता है और समस्या का हल ढूंढने लगता है। अचेतन के प्रयास के फलस्वरूप ही समस्या का हल मिल जाता है।

9) स्वतन्त्र साहचर्य (Free Association) :— स्वतन्त्र साहचर्य के आधार पर फ्रायड ने अचेतन के अस्तित्व को प्रमाणित किया है। रोगियों की चिकित्सा के समय फ्रायड ने देखा कि स्वतन्त्र साहचर्य की विधि से जब रोगी कहना शुरू करता है; तो वह ऐसी विस्मृत अनुभूतियों को व्यक्त करने लगता है, जिनका सम्बन्ध चेतना से नहीं है। ऐसी अनुभूतियां अचेतन मन के ही अंश हैं, जिनकी अभिव्यक्ति स्वतन्त्र साहचर्य के समय अचेतन रूप से ही जाती है।

10) मानसिक रोग (Mental disease) :— यदि मानसिक रोग अथवा मानसिक विकृति पर ध्यान दिया जाय तो अचेतन का अस्तित्व सिद्ध हो जाता है। अचेतन की कुछ इच्छाएं इतनी जटिल और प्रबल होती हैं कि चेतन के प्रतिबन्धक (Censor) को कमजोर बनाकर मानसिक रोग के लक्षणों के रूप में प्रकट होने लगती हैं।

11) निद्रा भ्रमण या स्वप्नचारिता (Somnambulism) :— समाज में कुछ ऐसे व्यक्ति पाए जाते हैं, जो नींद की अवस्था में उठकर घूमने लगते हैं और कुछ कार्य भी कर डालते हैं पर जागने पर उन्हें इसका कुछ भी स्मरण नहीं रहता है। ऐसे ही को somnambulism कहते हैं।

अचेतन की विशेषताएं (characteristics of Unconscious)

फ्रायड के अनुसार अचेतन की विशेषताएं इसप्रकार हैं :—

1) अचेतन मन का बड़ा भाग है (Unconscious is the major segment of the mind) :— फ्रायड ने अचेतन को मन का सबसे बड़ा भाग माना है। उनके अनुसार मन का 7/8 भाग

Date

अचेतन है और केवल 1/8 भाग चेतन है। इससे भी अनुमान लगाया जा सकता है कि अचेतन मन की अनुभूतियां चेतन मन की अनुभूतियों से कितनी अधिक हो सकती हैं।

2) अचेतन में 'इड' प्रवृत्तियां रहती हैं (Unconscious contains the Id impulses):— अचेतन 'इड' प्रवृत्तियों (Id impulses) से भरा हुआ है। कारण यह है कि Id को वास्तविकता का ज्ञान नहीं रहता है। इसलिए अपने कामों के परिणाम को बिना सोचे ही अपनी सभी अनैतिक इच्छाओं की तृप्ति करना चाहता है। किन्तु सामाजिक नियम, लोक लज्जा और नैतिक-धार्मिक दबाव के कारण 'इड' की ऐसी इच्छाओं की पूर्ति नहीं हो पाती है। फलतः इन इच्छाओं का दमन अचेतन मन में हो जाता है। अतः इड प्रवृत्तियां अचेतन के विषय वस्तु (contents) बन जाती हैं।

3) अचेतन सुख-दुःख के नियम से निर्देशित होता है (Unconscious is guided by pleasure-pain principle):— जिसप्रकार चेतन वास्तविकता के नियम के आधार पर काम करता है, उसीप्रकार अचेतन सुख-दुःख के नियम के आधार पर काम करता है। इसे वास्तविकता की तनिक भी चिन्ता नहीं होती है।

4) अचेतन कामुक इच्छाओं का निवास है (Unconscious is the reservoir of sexual desires):— अचेतन में काम सम्बन्धी इच्छाएं रहती हैं, ऐसा फ्रायड का मत है। इस बात को लेकर बहुतों ने फ्रायड की आलोचना की है। फ्रायड ने काम का (Sex) व्यवहार व्यापक अर्थ में किया है। उनके अनुसार संभोग को ही कामुकता नहीं कहते, बल्कि संतान के प्रति माता-पिता का प्रेम, भाई-बहनों के बीच प्रेम आदि कामुकता के ही परिचायक हैं।

5) अचेतन अतार्किक है (Unconscious is illogical):— अचेतन को अतार्किक कहा गया है, क्योंकि यह तर्क

के आधार पर नहीं देखता, कि जिन इच्छाओं की पूर्ति वह चाहता है उनके लिए समय और स्थान अनुकूल है या नहीं। ऐसा इसलिए होता है कि अचेतन मन को बाह्य जगत का कोई ज्ञान नहीं रहता।

6) अचेतन को उचित अनुचित का ज्ञान नहीं रहता है (Unconscious is nonmoral) :— अचेतन को भले, बुरे, उचित अनुचित का कोई ज्ञान नहीं रहता, वह नैतिक आदर्शों एवं धार्मिक उपदेशों से स्वतन्त्र रहता है। सामाजिक-असामाजिक, नैतिक-अनैतिक अपनी सभी इच्छाओं की पूर्ति वह चाहता है।

7) अचेतन सक्रिय एवं गत्यात्मक स्वरूप का है (Unconscious is active and dynamic) :— अचेतन मन की इच्छाएं शान्त एवं निष्क्रिय नहीं रहती, बल्कि सक्रिय एवं क्रियाशील रहती हैं। वे सदा ~~प्रकट~~ प्रकट होने का प्रयास करती हैं और अवसर मिलते पर प्रकट भी हो जाती हैं। चेतन के प्रतिबन्धक (censor) के भय से अचेतन इच्छाएं अपना रूप बदलकर प्रकट होती हैं। दैनिक जीवन की भूलें, स्वप्न आदि इसके उदाहरण हैं।

8) अचेतन इच्छाएं साथ-साथ रहती हैं (Unconscious desires go together) :— अचेतन की एक विशेषता यह है कि अचेतन की इच्छाएं अपनी अभिव्यक्ति के लिए संघर्ष नहीं करती। अचेतन में कुछ इच्छाएं ऐसी भी होती हैं जो परस्पर विरोधी होती हैं, फिर भी वे मिल-जुल कर अपनी तृप्ति चाहती हैं। जिन्हें फ्रायड के शब्दों में संद्वीपीकरण कहा जाता है।

9) अचेतन शैशव स्वरूप का होता है (Unconscious is infantile in nature) :— बच्चे जिसप्रकार एक इच्छा की उत्पत्ति के बाद उसकी पूर्ति बहुत तुरंत चाहते हैं उसीप्रकार अचेतन भी अपने विचारों की अभिव्यक्ति अतिशीघ्र करना चाहता है। जबतक अचेतन अपने विचार की सन्तुष्टि नहीं

कर लेता है तबतक वह तनाव की स्थिति में रहता है। अतः अचेतन के स्वरूप की तुलना बच्चों के स्वभाव से की जाती है।

यहाँ अचेतन की विशेषताओं की चर्चा फ्रायडियन दृष्टिकोण (Freudian Viewpoint) के अनुसार की गई है। इनका विचार काफी वैज्ञानिक भी है। फिर भी कुछ मनोवैज्ञानिकों ने अचेतन को लेकर कुछ शब्दों पर फ्रायड की आलोचना की है। इन आलोचकों में एडलर (Adler) तथा युंग (Jung) प्रसिद्ध हैं। ये दोनों शुरू में फ्रायड के सहकारी थे। लेकिन बाद में दोनों ने अलग-अलग सिद्धान्त प्रतिपादित किए। एडलर वास्तव में फ्रायड के अचेतन सम्बन्धी मत को स्वीकार नहीं करता है। वह न तो दमन को मानता है और न अचेतन के महत्व को।

दूसरी ओर युंग दमन तथा अचेतन दोनों के महत्व को मानता है लेकिन वह दो तरह का अचेतन मानता है — वैयक्तिक (Personal) और जातीय या सामूहिक (racial or Collective)। अतः अचेतन में दमित कुछ इच्छाएँ ऐसी हैं जिनकी तृप्ति व्यक्ति चेतन रूप से नहीं कर पाता है और कुछ ऐसी हैं जिन्हें व्यक्ति ने अपने पूर्वजों से (वंश-परम्परा के द्वारा) ग्रहण किया है। दूसरी ओर अचेतन की सभी इच्छाएँ कामुक नहीं होती हैं, बल्कि कुछ इच्छाएँ अकामुक भी होती हैं।

—X—

कुमारी कविता
मारवाड़ी कॉलेज, दरभंगा